

26. तीर्थ का पुण्य

एक गांव में दो समव्यस्क बूढ़े थे। दोनों के मन में बहुत दिनों से तीर्थ यात्रा की धुन थी, पर घर-गृहस्थी के झंझटों से दोनों को फुरसत नहीं मिल पा रही थी। एक दिन दोनों ने तीर्थ यात्रा पर जाने का निश्चय कर ही लिया। पहले बूढ़े ने अपनी कुल जायदाद-पच्चीस गाएं बेच दीं, यह-खर्च जुट गया। जाते समय उसने लड़कों से कहा- “बेटो, मैंने ये अपनी मेहनत से खरीदी थीं, तुम भी मेहनत करो। स्मरण रखो, मेहनत ही सबसे बड़ा धन है।”

दूसरे ने अपनी जमीन को चार भागों में बाँटा। उसने लड़कों से कहा- “मैं तो जाता हूँ, अब घर-गृहस्थी तुम लोगों की।” और संचित अर्थ लेकर चल दिया।

दोनों दिन भर चलते, रात में किसी गांव में ठहरते, फिर सुबह चल पड़ते। गांव के लोग भाग्यशाली तीर्थ यात्री मानकर उनका बहुत आदार-सत्कार करते। पर एक गांव रास्ते में ऐसा मिला, जहाँ दुर्भिक्ष अपना मनहूस साया फैलाए बैठा था। पहला बूढ़ा गाँव की हालत देखता और करुणा से उसके नेत्र भर आते। दूसरा देव-दर्शन की उतावली में बिना रुके चले जा रहा था। इतने में एक घर से क्षीण कराह सुनाई दी। पहले बूढ़े ने सुना, ठहर गया, भीतर गया, दूसरा बिना रुके चल दिया।

घर में जाकर पहले बूढ़े ने देखा- एक स्त्री, एक पुरुष और एक बच्चा तीनों भूख से दम तोड़ने वाले हैं। वह झट बाहर आया, पानी लाया, अपनी झोली से आटा निकाला और घोलकर तीनों को पिलाया। दस-ग्यारह रोज़ में कहीं तीनों मरणासन्न प्राणी काम करने लायक स्वस्थ हो सके। अनावृष्टि से खेत झुलस चुके थे, बैल भी मर चुके थे। अब खेती हो तो कैसे, पहले बूढ़े ने अपने पैसे से जाकर दो हट्टे कट्टे बैल खरीदे, दूसरे गाँव से जाकर बीज लाया, बड़ी मेहनत से कुएं को खूब गहरा खुदवाकर खेती शुरू करवाई; और गाँठ के पैसे खर्च हो जाने से तीर्थ यात्रा की हाँस छोड़कर घर लौट आया।

उधर तीर्थ में पहुँचा दूसरा बूढ़ा देव-दर्शन के लिए मन्दिर में जा रहा था। अपार-भीड़ से देह छिल रही थी। इतने में उसने देखा-देव प्रतिमा के स्थान पर उसके मित्र की मूर्ति है। वह चकित, विस्मित देखता रहा। भला, यह यहाँ कब पहुँच गया ? और पहुँचा भी तो क्या भगवान् ने इसे स्वयं अपने में लीन कर लिया ?

दूसरे बूढ़े को कोई समाधान न मिला। यात्रा कर वह भी घर पहुँचा। रास्ते में वह दुर्भिक्ष-ग्रस्त गांव भी मिला। उक्त गाँव में उसका बहुत स्वागत हुआ। सबकी जबान से एक ही बात सुनी “ऐसा ही था वह भी। ये तीर्थ यात्री बड़े पुण्यात्मा हैं, साक्षात् भगवान का अवतार।”

दूसरा बूढ़ा अपने में सिमटा जा रहा था। पहला बूढ़ा घर पहुँचा। सबने कहा- ‘गाँठ को भी खोया, और राम को भी न पाया।’

दूसरे बूढ़े के लौटने पर बाजे बजे, प्रीतिभोज हुए, प्रसाद बँट पर वह सोच रहा था- “तीर्थ तो मैंने किया, लेकिन तीर्थ का पुण्य मेरे हाथ न लगा। जैसा गया, पाप की गठरी वैसी की वैसी ही लौटा कर ले आया।”

* अभ्यास *

1. पहले बूढ़े ने गाँव के घर में घुसकर क्या-क्या देखा ?
2. दूसरे बूढ़े ने मन्दिर में देव प्रतिमा के स्थान पर क्या देखा ?
3. जब बाजे बजे तो दूसरे बूढ़े ने क्या सोचा ?

